SHODH SANKALP

SHODH SANKALP SAMIKSHA

(An International, Peer- reviewed, Refereed Journal)

(ISSN 2583-2239)

Certificate of publication for the article titled

" उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में शहरी मध्यवर्गीय स्त्रियों की दशा एवं दिशा "

Authored by

Kumari Nitu

Published in

Year 2024, Volume 4, Issue 1

Dr B Kesari
Editor- in -Chief

www.shodhsankalp.in

उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में शहरी मध्यवर्गीय स्त्रियों की दशा एवं दिशा

[1]कुमारी नीतु

शोध सार

उषा प्रियंवदा ने मुख्य रूप से शहरी मध्यवर्गीय जीवन को देखा- परखा और अपने साहित्य में स्थान दिया है। उषा प्रियंवदा ने अपने लेखन साहित्य में उन स्त्री पात्रों को स्थान दिया है, जो बात-बात में आँसुए नहीं बहाती है, न ही आंचल में दूध और आंखों में पानी लेकर चलती है बल्कि उनके साहित्य में स्त्री पात्र चुनौतियों से जुझती है, उसे स्वीकार करती हुई दिखाई देती है। उनकी स्त्रियां परिस्थितियों से जूझने वाली और दृढ़ - संकल्प वाली है। उन्होंने अपने आस-पास ऐसी ही स्त्रियों को देखा और उन्होंने अपनी सोच से उन्हें प्रगल्भ किया है। उनका साहित्य किसी विशेष वर्ग या समुदाय को संबोधित नहीं है, वह स्त्री मन का एक अनोखा लोक साहित्य गगन पर उभारती है। कोई भी लेखक या लेखिका अपने समय और समाज की विसंगतियों को भली-भांति चित्रित करता है। क्योंकि यही उसका धर्म होता है। जो जितनी गंभीरता से इस धर्म का पालन करता है वह उतना ही अच्छा लेखन होता है। उषा जी अपने इस लेखक धर्म का गंभीरता से अनुपालन किया है और यही धर्म उन्हें खास बनाता है। उन्होंने शहरी मध्यवर्ग जीवन को भरपूर जिया और इसलिए उन्होंने इसका बखूबी चित्रण किया है।

मूल शब्द - मध्यवर्ग, परिस्थितियाँ, दशा-दिशा, मेहनतकश, मिथ्याचार, विसंगतियां, किसान, मजदूर, दलित।

लेखक

शोधार्थी हिंदी-विभाग, बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय धनबाद Email - kumarinitu2799@gmail.com.

प्रस्तावना

कथा साहित्य के क्षेत्र में फणीश्वर नाथ 'रेणु' ने देशी पात्रों व घटनाओं को अपना विषय बनाया। गांव में बसने वाले किसानो, मजदूरों, पिछड़े वर्ग के लोगों और मेहनतकश तबको के दलितों को अपने साहित्य में स्थान दिया। कुछ इसी प्रकार उषा प्रियंवदा ने शहरी मध्यवर्गीय स्त्रियों को अपने साहित्य में स्थान दिया है। उनके उपन्यासों में 'मैला आंचल' जैसे उपन्यास और 'कमली' जैसे पात्र नहीं है। उन्होंने ग्रामीण स्त्रियों या ग्रामीण जीवन को छुआ नहीं है। उनका ग्रामीण जीवन या ग्रामीण स्त्रियों से कोई संपर्क ही नहीं था

इसलिए उन्होंने अनदेखे-अनजाने जीवन पर कुछ लिखना अपराध ही होता। उषा जी ने शहरी मध्यवर्गीय जीवन को भरपूर जिया है इसलिए उन्होंने शहरी मध्यवर्गीय स्त्रियों की विसंगतियों का चित्रण बखूबी किया है। कोई भी लेखक या लेखिका अपने समय व समाज की मिथ्याचार और विसंगतियों का ही चित्रण करती है। नि:संदेह उषा जी ने भी अपने समय व समाज की विसंगतियों को ही दर्शाया है और यही विशेषता लेखक या लेखिका को खास बनता है।

उषा प्रियंवदा के छः उपन्यास है, लेकिन मैं आरंभिक तीन उपन्यासों के स्त्री पात्रों की ही दशा एवं दिशा का चित्रण करूंगी। 'पचपन खंबे लाल दीवारें' उषा प्रियंवदा का प्रथम उपन्यास है, जिसका प्रकाशन 1961 ईस्वी में हुआ। इस उपन्यास में मध्यवर्गीय परिवार से संबंधित सुषमा नामक एक ऐसी लड़की की कहानी है जो अपने तरीके से आत्मसंघर्ष कर रही है। शहरी मध्यवर्गीय परिवारों में स्त्री का भाग्य पति, परिवार और बच्चों तक ही सीमित होती है। स्त्री-जीवन से तात्पर्य ही गृहस्थ-जीवन होता है, लेकिन सुषमा इससे भिन्न है। सुषमा अपने परिवार की बड़ी लड़की होने के नाते सारी जिम्मेदारी उनके कंधों पर है। सुषमा के पिता रिटायर एवं पक्षाघात से पीड़ित है। घर में मां की ही हुकूमत चलती है। सुषमा के पिता को बहुत कम पेंशन मिलती थी इसलिए घर में प्रमुख आय का स्रोत सुषमा की तनख्वाह थी। घर में माता-पिता के अलावा उनके चार छोटे भाई-बहन हैं जिनकी जिम्मेदारी भी सुषमा के ही कंधों पर है। उसने अपनी बुद्धि व परिश्रम से दिल्ली के लेडी श्रीराम कॉलेज में अध्यापक की जगह हासिल की और नौ वर्षों की सेवा के उपरांत वह गर्ल्स हॉस्टल की वार्डन बन गई। सुषमा अपने अनुशासित एवं विरले व्यक्तित्व के कारण ही छात्रों और अध्यापकों के बीच प्रिय थी। उन्हें रहने के लिए जो आवास मिला है वह उसे इस तरीके से रखती है कि उनके दूसरे सहयोगी उनसे ईर्ष्या की भावना रखते थे। अपने चेहरा, व नाक-नक्श में आकर्षक दिखती है परंतु 33 की उम्र में भी वह अभी तक अविवाहित है। परिवार से अलग अकेली कामकाजी स्त्री की अपनी कई सारी परेशानियां है। वह प्रश्न और संतुष्ट दिखने का प्रयास करती है लेकिन सवाल पूछ-पूछ कर लोग उसे परेशान करते हैं। घर की जिम्मेदारियों ने उसके माता-पिता को उसकी शादी के बारे में सोचने का मौका ही नहीं दिया क्योंकि सुषमा की कमाई से ही घर चलता है इसलिए अगर यह विचार भी कभी उनके मन में आया तो यही सोचकर टाल देते कि सुषमा की शादी के बाद घर कैसे चलेगा ?

आधुनिक भारतीय नारी सुषमा के माध्यम से छटपटाहट, ऊब, अकेलेपन और संत्रास की स्थिति से उत्पन्न सामाजिक और आर्थिक विवशताओं का बड़ा ही मार्मिक चित्रण 'पचपन खंबे लाल दीवारें' उपन्यास में उद्घाटित किया है। सुषमा अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए विवाह नहीं करती है। सुषमा पढ़ी-लिखी तथा कामकाजी स्त्री होते हुए भी रूढ़िग्रस्त सामाजिक परंपरा व नैतिक वर्जनाओं के साथ परिवार की परेशानियों को झेलती हुई विवाह नहीं करती है। मध्यवर्गीय समाज

में सुषमा जैसे पात्र अपने परिवार की इच्छाओं की पूर्ति के लिए नौकरी करती हुई अंदर ही अंदर घुटकर अपने सामाजिक दायित्व का पालन करते हुए कब बूढ़ी हो जाती है उसे स्वयं नहीं पता चलता है। वह अपने परिवार के लोगों के लिए एक मशीन बनकर रह गई है और इसीलिए उसे सारे संबंध काटने को दौड़ते हैं, सुषमा अपने जीवन से निराश होकर कहती है - "यह कॉलेज ये खंबे मेरी डेस्टिनी है मुझे यही छोड़ दो।"1 सुषमा के एकाकी जीवन में 'नील' नामक युवक का प्रवेश होता है तो वह उसके प्रेम व अपनेपन की भाव से रोमांचित हो उठती है। वह अपने प्रेमी की बांहों में अपने सारे दुख- दर्द भूल जाती है, क्योंकि वह एक कवच के समान समस्याओं तथा आपत्तियों से बचाता है। वह अपने ऐसे प्रेमी को भी यह कहकर अपने जीवन से निष्कासित करने के लिए विवश हो जाती है कि "मेरी बहुत जिम्मेदारियां हैं। तुमसे तो कुछ छिपा भी नहीं है। पक्षाघात से पीड़ित बाबू, दो बहने और भाई सब मुझे करना है।" 2 अंततः वह अपने परिवार के लिए अपने प्रेम भावना का भी दमन कर देती है। नौकरी पेशा युक्त नारी के विषय में डॉक्टर प्रमिला कपूर का कथन है- " यह शब्द उन स्त्रियों के लिए प्रयुक्त हुआ है जो वेतन वाले काम धंधों में लगी है, उनके लिए नहीं जो समाज सेवा में रत है या अवैतनिक रूप से कम कर रही है।"3

उषा जी अपने चर्चित उपन्यास 'रुकोगी नहीं राधिका' में नारी की बदलती हुई मान्यताओं, विश्वासो और परिस्थितियों को अपनी लेखनी का आधार बनाया है। इस उपन्यास में राधिका शहरी मध्यवर्गीय सुखी परिवार की इकलौती बेटी है। उसके परिवार में पिता, भाई-भाभी सभी है, जो उसे प्रेम करते हैं लेकिन माँ की मृत्यु के पश्चात पिता से उसका गहरा लगाव हो जाता है, किंतु पिता अपनी ही बेटी की सहेली विद्या से जो लगभग 20 वर्ष छोटी है, उनसे शारीरिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए विवाह कर लेते हैं। इसलिए राधिका के मन में पिता के प्रति विरक्ति का भाव जागृत होता है। वह अपने घर में ही अजनबी बनकर अकेलेपन की जिंदगी जीने के लिए मजबूर है। वह अमेरिका जब जाती है तो वहाँ डेन के कार्यों में सहयोग करती है। पुनः अपने देश जब आती है तो ऐसा अनुभव करती है कि मेरा रहन-सहन, वातावरण एक भावहीन पुतली की भांति हो गई है। इसमें राधिका के जीवन की अकेलेपन और संत्रास की भाव जागृत हुई है। उषा प्रियंवदा ने 'राधिका' के माध्यम से एक आधुनिक मध्यवर्गीय नारी की मनोदशा का सुंदर चित्रण किया है। 'राधिका' इलेक्ट्रा ग्रंथि से ग्रस्त है इसीलिए अपनी विमाता के सामीप्य नहीं रहना चाहती है।"प्राय: देखा गया है कि जो लड़कियां इलेक्ट्रा कांप्लेक्स से ग्रसित होती है तो वह विवाह करके सुखी नहीं होती है। 4 इस कारण वह तालमेल नहीं बैठा पाती है। डैन 'राधिका' को युवा मित्र बनाने की सलाह देता है क्योंकि वह 'राधिका' की मनोवृत्ति को समझता है इसलिए कहता है - "सीमाओं से निकलो, दुनिया देखो, अपनी संभावनाओं को विकसित करो, किसी युवा मित्र से....।" 5

इस उपन्यास में स्त्री चेतना के साथ ही बदलते रिश्तों में सामंजस्य स्थापित न कर पाने वाले व्यक्तियों और संबंधों का सूक्ष्म अध्ययन करती है। डॉ. वार्ष्णेय

कहते हैं कि "राधिका स्वतंत्रता का विकास चाहती है, परंपरागत संस्कारों को तोड़ना चाहती है, अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व स्थापित करना चाहती है।" 6 'राधिका' के द्वारा उषा प्रियंवदा ने हमारे समाज की पढ़ी-लिखी जागरुक स्त्रियों के जीवन की दुख, घुटन और बाधाओं का बारीकी से अंकन किया है, जो किसी भी परिस्थिति में नारी के स्वाभिमान और समानता को बरकरार रखने के लिए संघर्ष करती है। "वह किसी की इच्छाओं के सामने नहीं झुकती है और अपना निजित्व समाप्त करने की बजाय अलग हो जाना बेहतर समझती है।" 7

उषा प्रियंवदा का तीसरा उपन्यास 'शेषयात्रा 1984 ईस्वी में प्रकाशित हुआ। इसमें 'अनु' नमक ऐसी लड़की की कहानी है जिसके माता-पिता नहीं है वह अपने मां के घर में पली-बढ़ी और पढ़ी है। उषा प्रियंवदा ने इस उपन्यास की नायिका 'अनु' के माध्यम से विदेश की धरती में पुरुषों के विश्वासघातों के सामने भारतीय वफादार पत्नी की समस्याओं का अंकन किया है। 'अनु' हमेशा अपने पति के गतिविधियों के प्रति सतर्क रहने के बावजूद भी उनके पति प्रणव अनु को छोड़कर अन्य स्त्रियों के साथ संबंध बनाता है और अपनी पत्नी अनु को असहाय और अकेला छोड़ देता है। आज भी जन-सामान्य में यह समस्या देखने को मिलती है।इस उपन्यास में 'अनु' एक संघर्षशील स्त्री है जो कठिन परिस्थिति में भी अपने जिजीविषा कायम रखती है। अपनी सहेली दिव्या द्वारा मार्गदर्शन कराने के बाद वह डॉक्टर बनती है। वह विश्वासघाती प्रणव की याद में हाय-हाय करने की अपेक्षा आत्मविश्वास, स्वालंबन और स्वतंत्र जीवन जीने में विश्वास रखती है। प्रणव को यह देखकर आश्चर्य होता है कि वह क्या वही अनु है जो पूरी तरह उस पर निर्भर थी। वह कहता है कि- "जिस पगली, बौराई लड़की को वह छोड़ दिया था क्या यह वही है? प्रखर, स्थिर और मौन।" 8

इस प्रकार 'अनु' अपनी उपलब्धियां से अपने 'अहं' का करारा जवाब देती है। उषा जी ने उपन्यास के माध्यम से यह दिखाने का प्रयास किया है कि पुरुषों के समान स्त्री भी सब कुछ हासिल कर सकती है। इसलिए उपन्यास की नायिका 'अनु' पति के द्वारा त्याग दिए जाने के बावजूद भी ना तो परंपरागत सामर्थ्यहीनता को स्वीकार करती है, न पति के नाम का लेवल लगाए रखने में इच्छुक हैं। उसमें आत्मबोध की भावना है। 'अनु' तमाम संघर्षों के बाद भी संतुलित और स्वस्थ दृष्टिकोण रखती है अपने जीवन के प्रति जबकि प्रणव तमाम ऐश्वर्य, सुख और भोग-विलास के बीच कुछ हासिल नहीं करता है। उषा प्रियंवदा ने 'अनु' के माध्यम से एक मध्यवर्गीय स्त्री की संघर्षशील चेतना को दिखाया है जो अपने पति के सानिध्य और संबल का सहारा ना पाकर भी नई जिंदगी पाने में सक्षम है। इस उपन्यास की नायिका 'अनु' के बदलते परिवेश और सोच को प्रतिबिंबित करती है। इस उपन्यास में उषा जी ने आज के युग में पति द्वारा उपेक्षित और तलाकशुदा स्त्रियां किस प्रकार अपना 'स्व' ढूंढ रही है इसका सफल चित्रण किया है।

'पचपन खंबे लाल दीवारें ', 'रुकोगी नहीं राधिका' और 'शेषयात्रा' यह तीनों ही नायिका प्रधान उपन्यास है। 'पचपन खंभे लाल दीवारें ',की 'सुषमा' , 'रुकोगी नहीं राधिका' की 'राधिका' और शेषयात्रा की 'अनु' तीनों ही पढ़ी-लिखी है जो अपने समाज से अधिक अपने पारिवारिक समस्याओं से जूझती है। 'सुषमा' के माता-पिता है पर उनके होने या न होने का कोई अर्थ नहीं है, 'राधिका' के पिता है पर मां नहीं, 'अनु' के माता-पिता दोनों नहीं है। खासकर 'सुषमा' अपने जीवन में विवाह के मामले में कोई फैसला नहीं ले पाती है और अंत तक असमंजस में पड़ी रहती है। 'राधिका' इस मामले में ठोस निर्णय लेती है और पिता को छोड़कर मनीष के साथ आगे बढ़ती है। जबकि 'अनु' का सब कुछ बिखर जाने पर वह अपने दृढ़ संकल्प से अपना पुनर्निर्माण करती है। इस प्रकार 'सुषमा' की तुलना में 'राधिका' और 'अनु' अत्यधिक प्रग्लभ दिखाई देती है जो हमें सोचने के लिए प्रेरित करती है।

अपने साहित्य में उषा जी ने किसी विचारधारा को थोपा नहीं है। उनके लिए तो मानव जीवन ही सर्व प्रमुख है। इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि उनके पात्र ही आगे आगे चलते हैं और स्वयं लेखिका पीछे-पीछे चलती है। यही उनकी साहित्यिक विशेषता है।

निष्कर्ष

उषा प्रियंवदा ने अपने साहित्य में स्त्री जीवन के संदर्भ में शहरी मध्यवर्गीय जीवन के विभिन्न गतिविधियों का जीवंत चित्रण किया है। उन्होंने स्त्री जीवन की विसंगतियों और परस्थितियों तथा उलझनपुर मन: स्थितियों का चित्रण अपने उपन्यासों में किया है। लेखिका ने स्त्री जीवन की बदलती हुए विश्वासों, मान्यताओं और परिस्थितियों के बदलाव को अपनी कलम का आधार बनाया है। उनके तीनों उपन्यास में एक रैखिक विकास देखने को मिलता है। पचपन खंभे लाल दीवारें, रुकोगी नहीं राधिका, और शेषयात्रा तीनों उपन्यासों की नायिका सुषमा, राधिका और अनु के बीच एक अंतर-संबंध दिखता है। यह तीनों ही उपन्यास नायिका प्रधान है। यह तीनों ही नायिकाएं पढ़ी-लिखी होने के बावजूद भी अपने परिवार और समाज से जुझती है और अपने तरीके से जीवन जीती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. उषा प्रियंवदा, पचपन खंभे लाल दीवारें, पृष्ठ -104, राजकमल प्रकाशन - 2013
2. वही पृष्ठ - 104
3. डॉ. प्रमिला कपूर, भारत में विवाह और कामकाजी महिलाएं, पृष्ठ 24
4. उषा प्रियंवदा, रुकोगी नहीं राधिका, पृष्ठ- 43, राजकमल प्रकाशन 1984
5.वही पृष्ठ - 26

6. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, द्वितीय महायुद्धोत्तर हिंदी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ 130, राजपाज एंड संस कश्मीरी गेट, दिल्ली 1976

7. सुरेश सिन्हा ,हिंदी उपन्यासों की प्रवृत्तियो एवं दिशाओं के नए आयाम, पृष्ठ 370, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, 1972

8. उषा प्रियंवदा, शेषयात्रा, पृष्ठ 104, राजकमल प्रकाशन 1984